एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

उर्द की फसल में कीट प्रबंधन

(*अभिषेक यादव, सोमेंद्र नाथ एवं अनिल कुमार पाल)
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, सोहांव, बलिया-उत्तर प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhicoa2@gmail.com

उर्द खरीफ में कम समय में तैयार होने वाली मुख्य दलहनी फसल है। यह ज्वार, बाजरा एवं अरहर के साथ बहुफसलीय तथा मिश्रित पद्वति के लिए भी उपयुक्त हैं, जिससे किसानों को अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है। यह फसल भूमि में राइजोबियम जीवाणु द्वारा नत्रजन का स्थिरीकरण करके मृदा में उर्वरता में भी सुधार करती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक होने के कारण इनमें कीटों का प्रकोप अधिक होता है, जिनके कारण प्रतिवर्ष इन फसलों की उपज का काफी भाग नष्ट हो जाता है। इन षत्रु कीटों को समुचित प्रबन्धन करके इस हॉनि को रोका जा सकता है।

उर्द फसल पर लगने वाले प्रमुख कीटों का विवरण निम्नलिखित है।

(1) **सफेद मक्खी– (*बेमीसिया टेबेसाई*)**

क्षति का स्वरूपः

इस कीट के वयस्क तथा षिषु पीले रंग के तथा पॅख पारदर्षी और मोम से ढके हुए होते है। ये आकार मे बहुत छोटे तथा मुलायम होते हैं। वयस्क कीट 1 से 2 मि.मी आकार के हल्के पीले रंग के होते है। मादा कीट पत्तियों के निचली सतह पर हल्के पीले रंग का अण्डें देती है। अण्डें से 5–10 दिन में षिषु निकलते हैं इसके प्रौढ़ तथा षिषु दोनों पत्तियों से रस चूसतें हैं तथा पत्ती के ऊपर मधु का स्त्राव छोड़ते है, जिससे काले रंग के कवक का आक्रमण हो जाता है, जिससे पत्तियों में प्रकाष संषलेषण वाधित हो जाता हैं व पत्तियाँ पीली पड़कर नीचे गिरने लगती हैं, तथा फूल एवं फलिया झड़ जाती हैं। इस कीट से फसल में पीला षिरा मोजेक्नाम विषाणु जनित रोग फैलता है।

2) **हरा फुदका– (*एमपोस्का कैरी*)**

क्षति का स्वरूपः

यह हरा एवं हल्के पीले रंग का त्रिकोणीय कीट होता है। इसके प्रौढ़ तथा षिषु पौधों कोमल भागों जैसे पत्तियों तनों एवं फलियों आदि से रस चूसते है। प्रभावित पत्तिया पीली होकर नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं। मादा कीट पत्तियों की निचली षिराओं में अण्डें देती हैं। जिससे 2–5 दिन में षिषु निकलते है। ये षिषु प्रायः 20 से 25 दिन तक फसल से रस चूसते हैं। सामान्य रूप से एक वर्ष में इस कीट की 6 पीढियॉ पायी जाती है।

(3) **एफिड या माह–ू (*एफिस ककिवोरा*)**

क्षति का स्वरूपः इस कीट के शिशु काले रंग के होते हैं, शिशु व वयस्क पत्तियों व टहनियों व शाखाओं पर भारी संख्या में पाए जो हैं। ये पौधों के पत्तियों, शाखाओं आदि से रस चूसते हैं, जिससे पौधों पर फफूंद लग जाती है।

(4) **तेला– (*अम्रास्का बिगूटुला बिगूटुला*)**

क्षति का स्वरूपः

यह बहुभक्षी कीट है जो दलहनी फसलों के फूलों में लगने मे लगने वाला यह मुख्य कीट है। इसका रंग काला होता है। यह कीट फूलों को खरोच देता है तथा उससे निकले रस को चूसता है, जिससे पौधों की बढवार रूक जाती है। फलस्वरूप फूल कमजोर एवं झड़ जाते है। इनकी संख्या प्रति फूल 7 से 8 पायी जाती है। 25 से 27 डिग्री सेल्यिस तापमान तथा 80 प्रतिषत आर्द्रता पर इस कीट का आक्रमण अधिक होता है।

(5) **चने की सूँडी– (*हेलिकोवरपा आर्मीजेरा*)**

क्षति का स्वरूपः

यह एक बहुभक्षी कीट है जो दलहन के अलावा अन्य फसलों में भी अत्याधिक क्षति करता है। इस कीट की हानिकारक अवस्था सूड़ी होती है जो हल्के हरे –भूरे रंग 3 से 5 सेमी.लम्बी होती है, तथा शरीर के ऊपरी भाग पर भूरे रंग की धारियॉ पायी जाती है। वानस्पतिक अवस्था में सूड़ी पत्ती एवं षाखाओं को खाती है। लेकिन फलों की अवस्था में यह कली तथा फलियों में छेंद करके नुकसान पहॅचाती है। फली को खाते समय प्रायः इसका सिर फली के अन्दर की तरफ तथा शरीर का भाग बाहर की तरफ लटका रहता हैं । एक सूँड़ी 30–40 फलियों के नुकसान पहुॅचाती हैं ।

(6) **चित्तीदार फली भेद कीट– (*मरूका विटराटा*)**

क्षति का स्वरूपः

इस कीट की सूडी हरें रंग की काले सिर वाली होती है। इस कीट के शरीर पर काले धब्बे पाये जाते है । मादा कीट अण्ड़ें, फूल, कली एवं फलियों पर देते है। सूड़ी पहले पत्तियों, फूलो तथा बाद में फलियों को खाती है। इसकी सूंडी फूलों तथा फलियों पर जाल बनाते है। इस कीट से लगभग 15–20 प्रतिशत तक फसल की उत्पादन पर प्रभाव पड़ता हैं।

(7) **बालदार सूँड़ी– (*इस्पाइलोसोमा ओबलिकुआ*)**

क्षति का स्वरूपः

इस कीट के व्यस्क लाल– भूरे रंग का होता है व पूर्ण विकसित सुंडी हरे – पीले रंग की होती है, व सारा शरीर बालों से ढका रहता है।यह पत्तियों, फूलों एवं पौधों के अन्य कोमल भाग जैसे तने और शाखाओं को खाती है।

अधिक आक्रमण होने पर सारी पत्तियॉ खा जाती है जिससे उत्पादन प्रभावित होती है। मादा कीट 400 से 800 अण्डें अपने जीवन काल में देती है। अण्ड़ें समूह में पत्तियों के निचली सतह पर देती है। जिससे 8 से 12 दिन में सूँड़ी निकलती है 1 वर्ष भर में इस कीट की चार पीढियों में पायी जाती है ।

(8) **तम्बाकू की सूँड़ी – (*स्पोडोपटेरा लिटुरा*)**

क्षति का स्वरूपः

इस कीट के लार्वा हरे मटमैले रंग के होते हैं, व शरीर पर हरे पीले रंग की धारियॉ पायी जाती हैं। इस कीट की सूड़ी पत्तियों को नुकसान पहूचाती हैं व उनके हरे पदार्थ को खाती है।

(9) बलिस्टर बीटल– *(माइलासिरिस फैलेराटा)–*

क्षति का स्वरूपः

इस कीट के वयस्क मध्यम आकार के होते हैं व सिर एवं वक्ष गहरें काले रंग का होता है। इसके वयस्क मृदा में अण्ड़े देते हैं। वयस्क भृंग फलियों, फूलों एवं दानों पर आक्रमण करते है, जिसके कारण पौधों में दाने भरने की अवस्था प्रभावित होती है। ये भृंग एक प्रकार का प्रतिरोधी द्रव स्त्रावित करते हैं जिसे कैंथेरिडिन कहते हैं।

समन्वित कीट प्रबन्धन–

- ✓ गर्मी में गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे जमीन में छिपे कीटों की अन्य अवस्था नष्ट हो जाए है।
- ✓ खेत को खरपतवार से मुक्त रखें जिससे कीटों का प्रकोप कम होता है।
- ✓ संतुलित उर्वरक का प्रयोग करे। नत्रजन का अधिक प्रयोग करने से फसल कीटो तथा रोगों के प्रति सुग्राही होता हैं। जबकि पोटाष के प्रयोग से फसल की सहनषीलता बढ़ जाती है।
- ✓ बालदार सूंडी के अण्ड़े तथा प्यूपा को एकत्र करके नष्ट कर देना चाहिए।
- ✓ कीट प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करना चाहिए।
- ✓ खड़ी फसल में प्रकाष प्रपंच फेरोमोन प्रपंच के 4–5 प्रति एकड़ के साथ –साथ चने की सूड़ी, रोयेंदार सूड़ी तथा चित्तीदार सूड़ी के लिए ट्राइकोग्रामा अंण्ड परजीवी को खेत में छोड़ना चाहिए।
- ✓ फसल में 5 प्रतिषत नीम की गिरी का छिड़काव करने से कीटो का प्रकोप कम होता है।
- ✓ समस्त प्रकार की सूड़ियों के नियंत्रण के लिए एन.पी.वी. की 250 से 300 एल.ई. मात्रा प्रति हैक्टेयर 600–800 लीटर पानी में घोलकर 0.1 प्रतिषत टीपोल या 0.5 प्रतिषत गुड़ के साथ मिलाकर छिड़काव करें।
- ✓ रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (गाउचो) की 2 ग्राम/किगा बीज में मिलाकर उपचार करना चाहिए ।
- ✓ खड़ी फसल में रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड के 0.025 प्रतिषत का जलीय घोल या थायोमेथाक्जैम की 100 ग्राम प्रति हैक्टेयर या एसिटामिप्रिड की 100 ग्राम/हैक्टेयर की दर से किसी एक का छिड़काव करे।
- ✓ एक रसायन का प्रयोग बार–बार न करें। क्योंकि इससे कीटों में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- ✓ काटने –कुतरने वाले कीटों के प्रकोप को कम करने के लिए इण्डोंक्साकार्ब14.5 ई.सी.की 200 मिली. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ✓ सफेद मक्खी नियंत्रण के लिए कीनालफास 25 ई.सी 1–5 लीटर/हैक्टेयर 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ✓ थ्रेप्स और सफेद मक्खी नियंत्रण के लिए पीला चिपचिपा जाल प्रति एकड़ 15 सेमी0 4–5 जाल प्रति एकड़।

निष्कर्ष

कुछ वर्षो में उर्द की फसल की उत्पादकता घटी है, जिसमें कीटों की अहम भूमिका रही है। कीटों के प्रकोप के कारण पैदावार में कमी आ जाती है। इन षत्रु कीट व रोग को समुचित प्रबन्धन करके इस हॉनि को रोका जा सकता है।